बी॰ ए॰ I वर्ष

प्रथम पेपर :-

राजनीति सिद्धांत

राजनीति विज्ञान की परिभाषा :-

राजनीति विज्ञान को अंग्रेजी भाषा मे Political Science कहते हैं, तथा political शब्द की उत्पत्ति यूनानी भाषा के polis शब्द से हुई है। जिसका अर्थ होता है नगर-राज्य। प्राचीन समय में जो नगर राज्य होते थे वह बहुत छोटे- छोटे होते थे उनकी जनसंख्या बहुत कम होती थी। और क्षेत्रफल भी अधिक नही होता था नगर राज्य की स्थिति, कार्य प्रणाली एवं गतिविधियों से संबन्धित विषय का अध्ययन करने वाले विषय को ग्रीक निवासी Politics कहते थे।

वर्तमान मे राजनीति विज्ञान मनुष्य के उन कार्य कलापों का अध्ययन करने वाला विज्ञान है, जिनका ~~सम्बन्ध~~ सम्बन्ध उसके जीवन के राजनीतिक पहलू से होता है।

गार्नर के अनुसार :- राजनीति विज्ञान के अध्ययन का आरम्भ और अंत राज्य के साथ होता है।

परिभाषा की दृष्टि से राजनीति विज्ञान को दो वर्गों में विभाजित किया है -

परम्परागत दृष्टिकोण :- (1) राजनीति विज्ञान केवल राज्य का अध्ययन
(2) राजनीति विज्ञान केवल सरकार का अध्ययन
(3) राजनीति विज्ञान राज्य व सरकार दोनो का अ

आधुनिक दृष्टिकोण :- लासवेल के अनुसार :- "राजनीति विज्ञान का अध्ययन वह राजनीति है जो यह बताये कि कौन, क्या, कब कैसे प्राप्त करता है।"

राबर्ट ए. डहल :- किसी भी राजनीति व्यवस्था में शक्ति, शासन अथवा सत्ता का बड़ा महत्व है।

अर्थात् संक्षेप में राजनीति विज्ञान मनुष्य के उन कार्यकलापों का अध्ययन करने वाला विज्ञान है, जिनका सम्बन्ध उसके जीवन के राजनीतिक पहलू से होता है। तथा उस अध्ययन में वह मनुष्य के जीवन के राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक, नैतिक आदि समस्त पहलुओं के पारस्परिक प्रभावों का अध्ययन करते हुए यह देखता है कि मनुष्य के जीवन को राजनीतिक पहलू उसके अन्य पहलुओं का और अन्य पहलू उसके राजनीतिक पहलू का परस्पर किस रूप में प्रभावित करते हैं।

राजनीति विज्ञान का क्षेत्र :-

(क) राज्य का अध्ययन

(1) राज्य का अतीत या ऐतिहासिक स्वरूप
(2) राज्य का वर्तमान स्वरूप
(3) राज्य का भावी स्वरूप

(ख) - सरकार का अध्ययन

(1) मनुष्य का अध्ययन
(2) संघों एवं संस्थाओं का अध्ययन
(3) अन्तर्राष्ट्रीय कानून एवं सम्बन्धों का अध्ययन
(4) वर्तमान राजनीतिक समस्याओं का अध्ययन

राजनीति विज्ञान का प्रकृति

कई विद्वान राजनीतिक विज्ञान को विज्ञान मानते है और कई विद्वान राजनीति विज्ञान को विज्ञान नही मानते है।

जैसे- अरस्तू ने राजनीति विज्ञान को सर्वोच्च विज्ञान कहा है।
(बोदा, हाब्स, माण्टेस्क्यू ब्राइस, फाइनर, लास्की)

किन्तु अनेक विद्वान ने राजनीति विज्ञान के विज्ञान होने के दावे का विरोध किया है। (बकल, कांटे, मेटलैंड, एमास, बीयर्ड, बर्क)

राजनीति विज्ञान सामाजिक विज्ञानो की भाँति ही तथ्यात्मक एवं मूल्यात्मक दोनो ही है। इसमे कला एवं विज्ञान दोनो के लक्षण पाये जाते है।

राजनीति विज्ञान विज्ञान नही है:-

राजनीति विज्ञान में विज्ञान जैसे प्रयोग एवं पर्यवेक्षण सम्भव नही है। एक प्राकृतिक विज्ञान प्रयोगशाला मे विभिन्न प्रयोग कर सकता है। पर्यवेक्षण कर सकता है। किन्तु राजनीति विज्ञान मे ऐसी प्रयोगशाला का अभाव है।

कार्यकारण में सुनिश्चित सम्बंध का अभाव:-

प्राकृतिक विज्ञान में जैसे हम पानी को एक निश्चित तापमान पर गर्म करगें तो वह अवश्य ही वाष्प मे परिवर्तित हो जायेगा किन्तु राजनीति में कार्य व घटना का कोई सम्बन्ध नही दिखाई देता है।

सर्वमान्य सिद्धांतों का अभाव:-

नियमों का अभाव:-

राजनीति विज्ञान "विज्ञान" है

राजनीति विज्ञान मुलतः एक सामाजिक विज्ञान है और इस दृष्टि से विज्ञान होने के सभी लक्षण पाये जाते है:-

- राजनीति विज्ञान का ज्ञान क्रमबद्ध व्यवस्थित है- राज्य सरकार, राजनीति संस्थाओं, धारणाओं, विचारधाराओं का ज्ञान इसी रूप में।
- सर्वमान्य सिद्धांतो का अस्तित्व है।

(3) कार्यकारण में पारस्परिक संबंध की व्याख्या सम्भव है।
विज्ञान नहीं मानने वालों ने कहा था कि राजनीति विज्ञान कल्पना, अनुमान एवं सम्भावना पर ही कार्य करता है इसकी तर्कपूर्ण व्याख्या नहीं की जा सकती जबकि चुनाव में पराजय का मूल कारण जन आकांक्षाओं पर खरा नहीं उतरना होता है।

(4) नियम व निष्कर्ष प्रतिपादन सम्भव है- अरस्तू 158 संविधानों के तुलनात्मक अध्ययन के बाद ही क्रांति के कारणों का प्रतिपादन किया

(5) भविष्यवाणी किया जाना संभव है-: प्लेटो ने सिसली के शासक को दार्शनिक राजा बनाने का प्रयोग किया था।
भारत में कौटिल्य ने नंदवंश का नाश करने के लिए चंद्रगुप्त का राजनीतिक प्रयोग किया

राजनीति विज्ञान कला है -: (1) बृहस्पति, शुक्र, मनु, कौटिल्य
प्लेटो जैसे प्राचीन यूनानी चिंतक ने अपने ग्रंथ स्टेट्समैन में राजनीति को शासन की एक श्रेष्ठ कला बताया है।
बिस्मार्क राजनीति को संभावनाओं की कला मानते हैं।
राज्य का संचालन किस रूप में हो, क्रियात्मक दृष्टि से यह कैसा व्यवहार करें राजनीति में इन सभी बातों का प्रतिपादन होता है।

इस प्रकार राजनीतिक शास्त्र विज्ञान एवं कला दोनों है राजनीतिक चिंतन जब सैद्धांतिक अध्ययन करता है तब वह विज्ञान है और जब मानव जीवन के सुख में वृद्धि करता है तब यह कला है।